पशुओं में अन्तः परजीवी के रोगथाम के उपाय

प्रो0 वेद प्रकाश

विभागाध्यक्ष

पशुपालन एवं दुग्ध विज्ञान विभाग

चन्द्र शेखर आजाद कृषि एंव प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय,
कानपुर

पशुओं में पाये जाने वाले सभी प्रकार के परजीवी चाहे वो अन्तः हो य बाह्य हो पशुओं को बहुत ही हानि पहुचाते है। कुछ इसी प्रकार के गम्भीर बीमारी उत्पन्न करने वाले अन्त परजीवी निम्न है।

1. फैसिओल

यह पशुओं के यकृत में पाये जाने वाला परजीवी है जो चपटा पत्ती के आकार का होता है। यह धोंधा को माध्यस्था परपाषी की भांति प्रयोग करता है, और मेटासर्केरिया लारवा उत्पन्न करता है, जो धोंधा से बाहर आकर जलवासी पौधे पर चिपक जाते है, इन जलीय पौंधो को पशुओं द्वारा खाने पर यह पशुओं में पहुच जाते हैं। जिससे पशु में एनीमिया उत्पन्न हो जाता है, तथा ऊतक क्षति जैसी गम्भीर बीमारिया उत्पन्न करते है।

2. टेपवार्म

इस प्रकार के कृमि का शरीर चपटा होता है, एवं कुछ से. मी से लेकर अनेक मीटर तक लम्बा होता है। यह परजीवी पशुओं के आहार नाल में पाया जाता है, एवं पशुओं के पोषण तत्वों का उपयोग कर पशुओं को हानि पहुचाते है। इनके लार्वा पशुओं के विभिन्न अंगों में सिस्ट आदि बनाते है, एवं हानि पहुचाते है। जैसे– हाईडिटिड, सिस्ट, सिस्टीसरकोसिस आदि

3. राऊडवार्म

यह वेलनाकार होता है, यह कृमि पशुओं कें विभिन्न अंगों में रहकर उन्हें हानि पहुचाता हैं, यह पशुओं में विभिन्न रोग जैसे– अनीमिया, भोजन भूख ना लगने के कारण कमजोरी, निमोनिया, आँखें में होने के कारण अन्धापन, गांठ बनना अंगो व ऊतकों को नष्ट करना आदि अवस्था उत्पन्न कर सकते है।

अन्तः परजीवियों के उपचार संक्रमित पशुओं का समय से उचित मात्रा में प्रभावी औषधियों जैसे– एलबेन्डा लाल, इवरमेक्टीन का प्रयोग पशुचिकित्सक की पर देना चाहिए

3. परजीवियों के रोकथाम के उपाय

1. पशुओं में परजीवी संक्रमण को रोकने के लिए इनके मध्यपोषियों को नष्ट कर देना चाहिए।
2. पशुओं को संतुलित व पौष्टिक आहार देना चाहिए, पशु जब स्वस्थ रहेगा तो कोई संक्रमण नहीं होगा क्योकि उसकी रोग निरोधक क्षमता बनी रहेगी।
3. पशुओं को समय–समय पर पशुचिकित्सक से जाँच कराना चाहिए, तथा रोगी पशुओं को अलग बाडे में य अलग स्थान पर रखकर उसका इलाज करना चाहिए।
4. पशुओं को चराने के लिए चारागाह संक्रमण से मुक्त होना चाहिए।
5. चारागाहो को अधिक दिनों तक के लिए खाली छोड देना चाहिए, जिससे उस चारागाह में उपस्थित कृमियों के लार्वाओं को परपोषी नहीं मिलेगा और लार्वा मर जायेगें।
6. एक स्थान पर अत्यधिक पशु नहीं रखने चाहिए, जिससे उनमें संक्रमण की सम्भावना कम हो जाय।
7. पशुओं को गीले स्थानों, जैसे तलाबों, जलाशय के किनारों पर नहीं चराना चाहिए।
8. पशुओं में जनन कराने के लिए साफ–सुथरे स्थान का चयन करना चाहिए।